प्रायोगिक संस्करण

भूगोल की समझ

आस-पास के परिवेश से शिक्षण

सत्र - 2010

विद्या दान परम दान

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

विषय सूची

खण्ड – एक : भूगोल की समझ

1. भूगोल की समझ
2. गाँव शहर का भूगोल

खण्ड – दो :

1. देखना और समझना
2. बदलाव का अध्ययन
3. स्थानीयता की पहचान और उसकी ताकत
4. अंतर संबंध (घंटनाओं, मानव)
5. मोहल्ला, गाँव पंचायत व शहर
6. संसाधन और उत्पादन
7. बच्चों के अनुभव

आमुख

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को एक सफल व्यक्ति के रूप में तैयार करना है जो आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो और न सिर्फ अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना कर सके, उनके समाधान खोज सके बल्कि मानव और प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीते हुए अपनी उपयोगिता प्रमाणित कर सके। परिवार, समाज और राष्ट्र के सदस्य के रूप में अपनी भागीदारी का निर्वाह करते हुए समृद्धि और समाधान पूर्वक जीने की योग्यता से सम्पन्न व्यक्ति तैयार करना शिक्षा का कार्य है, इसीलिए कहा गया है – "शिक्षा जीवन की तैयारी है"।

वर्तमान में हमारी शिक्षा ऐसा नहीं कर पा रही है । इसके अनेक कारणों में से एक कारण यह भी है, कि हम पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु को व्यावहारिक जीवन के संदर्भो से जोड़कर परोसने में असमर्थ रहे है ।

सिद्ध संस्थान मसूरी द्वारा तैयार की गई "इतिहास की समझ" से इतिहास को नये संदर्भो में देखने की दृष्टि मिलती है। इसीलिए उनके सहयोग से इस पुस्तक को एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा राज्य के शिक्षकों को उपलब्ध कराया गया ताकि इस विषय के प्रति उनकी समझ व सोच को एक नई दिशा मिल सके। इस पुस्तक की उपयोगिता को देखते हुए हाईस्कूल/हायरसेकेण्डरी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले प्रमुख विषयों में भी इस तरह की पुस्तक तैयार करने का सुझाव आया। अभी राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान हमारे सामने है और इसके अंतर्गत शिक्षकों का वृहत् पैमाने पर प्रशिक्षण किया जाना है, अतः इस तरह की पुस्तकें प्रशिक्षण के लिए बहुत अच्छी संदर्भिका भी साबित होंगी, इस दृष्टि से यह सुझाव बहुउपयोगी एवं सकारात्मक था।

यह निर्णय लिया गया कि राज्य में हाई तथा हायर सेकेण्डरी स्कूल में बहुसंख्य विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन किए जाने वाले 11 विषयों में इस तरह की पुस्तकें तैयार की जायें। अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, रसायन, कामर्स व अर्थशास्त्र में इस तरह की पुस्तकें तैयार करने का दायित्व उन्नत अध्ययन शिक्षण संस्थान बिलासपुर को एवं हिन्दी, संस्कृत, जीव विज्ञान, भूगोल एवं राजनीति शास्त्र की जिम्मेदारी शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर को दी गई। इन संस्थाओं ने प्रत्येक विषय के लिए विषय विशेषज्ञों की समितियॉ बनाई। इन समितियों द्वारा सभी विषयों का प्रथम प्रारूप तैयार किया गया। पहले ही प्रयास में कुछ विषय बहुत अच्छे बन पड़े थे तथापि हमें लगा कि इस पर अधिक गहन मंथन होना चाहिए। इसी सोच के तहत् तीन दिवसीय उन्मुखीकरण के लिए सिद्ध संस्थान मसूरी के निदेशक श्री पवन गुप्ता को एस.सी.ई.आर.टी. में आमंत्रित किया गया। इस विचार मंथन में समितियों के सदस्यों की समझ बनाने का बहुत अच्छा प्रयास हुआ। इस मार्गदर्शन से सभी में अधिक स्पष्टता आई कि विभिन्न विषयों की समझा संबंधी पुस्तकों को किस तरह का स्वरूप देना है।

चूंकि विभिन्न विषयों की समझा संबंधी पुस्तकों पर अभी बहुत विचार मंथन और लगातार कार्य किए जाने की आवश्यकता है, अतः अभी तैयार पुस्तकें प्रायोगिक संस्करण के रूप में प्रकाशित की जा रही है। मैं चाहूंगा कि परिश्रमी व्याख्याता गण इनमें उद्घृत समझ के आधार पर विद्यार्थियों के साथ प्रयोग करें और देखें कि विद्यार्थियों का अभिमत क्या बनता है? सीखने की गति, विषय के प्रति रूचि तथा विषय की समझ के विकास में कोई अंतर आता है क्या? क्या वास्तव में इस पद्धति से आपका विषय विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का संचार, अधिक मेंहनत की ललक तथा मानवता के प्रति

विश्वास जगाने में सफल होता है? इस प्रकार के प्रयोग संपूर्ण राज्य के सभी व्याख्याता करें। प्रयोग से मिले अच्छे अनुभवों को आई.ए.एस.ई. तथा सी.टी.ई. को भेजें। आपके प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर एक वर्ष बाद ये पुस्तकें संशोधित की जाएगी। वह पहला संस्करण होगा। इस प्रकार प्रत्येक 2–3 वर्षो में इसके संस्करण बदलते जाएंगे ऐसी हमें आशा है। तभी हम कह पाएंगे कि हम, हमारे विषय तथा हमारे विद्यार्थी समय के साथ चल रहे है अन्यथा नहीं।

अभी जितना भी प्रयास हुआ है उसके लिए उन्नत अध्ययन शिक्षण संस्थान बिलासपुर व शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर के प्राचार्य, एस.सी. ई.आर.टी. का राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान प्रकोष्ठ, सभी विषयों के समन्वयक व लेखन समूह के सदस्यगण बधाई के पात्र है। हम सिद्ध संस्थान मसूरी के निदेशक श्री पवन गुप्ता जी के विशेष रूप से आभारी है, जिनके मार्गदर्शन में इन पुस्तकों को वर्तमान स्वरूप दिया जा सका।

नंदकुमार
(भा.प्र.से.)
संचालक, एस.सी.ई.आर.टी.

प्राक्कथन

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रकिया है, जिसमें सीखना समाहित है और सीखने में निरन्तरता होती है। कोई अनुभव से सीखता है, कोई अध्ययन से, कोई सृजन से। शिक्षक होने का अर्थ सतत् अध्ययनशील बने रहना। जो शिक्षक ज्ञान की साधना बंद कर देता है वह अन्ततः ज्ञान का द्रोही बन जाता है। शिक्षक की सर्वश्रेष्ठ मित्र है – पुस्तकें। शाला या महाविद्यालय तो हमारे सीखने के निश्चित केंन्द्र होते है । शेष जीवन तो आत्मशिक्षण से ही चलता है। यह अनिवार्य सत्य है कि सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अध्ययन से असाधारण बन जाता है।

सीखने से हमें बड़ा डर लगता है पर यह डर तभी तक रहता है, जब तक हम सीखना प्रारंभ नहीं कर देते। भ्रम की स्थिति तभी तक बनी रहती है, जब तक हम निर्णय लेने को कटिबद्ध नहीं हो जाते। ऊब या अरोमांच हमें तभी तक होता है, जब तक हम नित नवीन नहीं होते। ज्ञान का कोई अंत नहीं होता, ज्ञान की विनम्रता होती है। ज्ञान का कोई पद नहीं होता, ज्ञान का श्रेष्ठता होती है। ज्ञान पर किसी का आधिपत्य नहीं होता। वह सबके लिए है और सब उसके लिए।

आज शिक्षा के क्षेत्र में जो विषय की समझ की बात उठी है वह हमारे बदलते परिवेश की अत्यन्त महत्वपूर्ण और अनिवार्य माँग है। पढ़ाये जाने वाले विषय आज हमारे बच्चों के लिए केवल सूचना देने की व्यवस्था मात्र बनकर रह गये हैं। इसी कारण हमारी शिक्षा में हानि व अवरोध उत्पन्न हो रहे हैं। सीखना अपने आप में एक मूल्यवान गतिविधि है खासकर तब जब वह सहायक और प्रेरणादायक माहौल में हो।

आज हमें शिक्षा के नैसर्गिक संस्कार को समझते हुए उसे महज बनाना होगा। उसकी दुरूहता को कम करते हुए उसे सहजता की ओर जाना होगा। पढ़ाये जाने वाले विषयों की पाठ्यवस्तु को व्यवहारिक जीवन के विभिन्न संदर्भो से जोड़कर बताना

होगा क्योंकि शिक्षा दर्शन के रूप में चिन्तन मूलक है, तो कर्म के रूप में अभ्यास मूलक, उपलब्धि के रूप में परिष्कार, और संस्कार मूलक है। शिक्षा एक पक्षीय विचार न होकर एक बहुआयामी, बहुस्त्रोतीय धारा है। यह मानव और प्रकृति के समन्वय से पैदा होती है। इसलिए इसे मानव और प्रकृति से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

आज हमें ऐसे नागरिक तैयार करने की आवश्यकता है, जो यह समझते हो कि "स्व" एवं प्रकृति के विविध उपादानों के प्रति उनकी क्या जिम्मेदारियाँ है। उसके लिए उनमे उचित मूल्य और अभिवृत्तियों का विकास किया जाना जरूरी है। आज आवश्यकता इस बात की भी है कि हमारी पढ़ाये जाने वाली विभिन्न पाठ्यपुस्तकें वे विषय बने जो बच्चों को सही सोचने व समझने वाला इंसान बनाए, उनके सर्वश्रेष्ठ को तलाशने में उनकी सहायता करें।

वर्तमान दशा में शिक्षा हमारे नैतिक स्तर को ऊपर उठाने में बहुत कम भूमिका निभा पा रही है। यदि शिक्षा को केवल आर्थिक विकास के साथ–साथ मानवता के नैतिक विकास में भी योगदान करना है, तो इसमें हमें स्कूली शिक्षा के दौरान पढ़ाये जाने वाले विषयों पर बहुत अधिक सजग रहना होगा। पाठ्यांश को व्यावहारिक जीवन के साथ जोड़ना होगा।

हमारी पाठ्य पुस्तकें नागरिक निर्माण की मजबूत कड़ी है। यह अधिक उपयोगी और सार्थक बने यह हम सब की सदेच्छा है। हम सब इसके लिए सदैव प्रयासरत है –

(श्रीमती प्रतिमा अवस्थी)
प्रायार्च एवं अपर संचालक
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय
शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)

लेखक की ओर से

व्यक्ति समाज का सदस्य है वह मानव समाज में विभिन्न प्रकार के कियाकलाप करता है। पर वह अपने चारों ओर के परिवेश से जुड़ा हुआ है। पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों, नदी–नाले, पहाड़–पर्वत, मिट्टी, खनिज और उनसे बनी तमाम भौतिक रासायनिक वस्तुओं से उसका दिन–रात का संबंध है ।

शिक्षा का कार्य दो विषयों पर केन्द्रित है एक प्रचलित मान्यताओं द्वारा फैलाये गए भ्रमों को समाज के सामने उजागर करना और दूसरा प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के विकास हेतु वैचारिक स्पष्टता एवं व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करना। हमारे प्रयोग और शोध इसी दिशा में जारी है।

शिक्षा के उद्देश्य को पाने के बहुत सारे माध्यम हो सकते हैं, प्रचलित पाठ्य पुस्तकें स्कूल कालेजों में पढ़ाई जाती है वे बच्चों में अनजाने में ही उच्च–निम्न, सभ्य–असभ्य जैसी भावनाओं के बीज उत्पन्न करती है। परोक्ष रूप से बहुत सारे गलत सही मूल्य भर देती है। हमारी कोशिश यही है कि हम स्थानीय समाज, भूगोल, पारंपरिक ज्ञान–विज्ञान को माध्यम बनाकर बच्चों को पढ़ाएं। इसके लिए हमने आसपास के कृषि के तरीके, पौधे वनस्पतियों, फसलों परिवार और गांव के तीज त्यौहार, स्थानीय मेला, गणना के तरीकों को अपना शिक्षण विषय बनाया है।

इस संदर्भ में हमारा यह अनुभव रहा है, कि इस विधि से प्राइमरी स्तर और मीडिल स्तर के बच्चों को उनकी शारीरिक और बौद्धिक जरूरतों को पूरा करते हुए दक्षतापूर्वक पढ़ाया जा सकता है। इस तरह पढ़ाने से हमें कई फायदें नजर आएं, बच्चे अपने आसपास की जिन जानकारियों को अनदेखा करते थे, उनकी अहमियत उनको समझ में आने लगी ।

1

भूगोल की समझ

बच्चों को शाला में भूगोल को एक विषय के रूप में हम पढ़ाते हैं । इसके अंतर्गत प्रायः हम पर्वत, पठार, मैदान, नदियां, सागर, महासागर के विषय पढ़ाते आ रहे हैं यह वि व के या फिर विभिन्न महाद्वीपों, पठारों पर्वतों के विषय में जानकारी देते रहे हैं, इससे :—

1. विद्यार्थी भूगोल विषय को अपने दैनिक जीवन से जोड़ नहीं पाते जिससे अपने दैनिक जीवन में समझ का विकास नहीं हो पाता ।
2. भूगोल विषय के अध्ययन के उद्देश्य ही समझ नहीं पाते ।

इस प्रकार भूगोल क्या है ? इसकी समझ नहीं बन पाती ।

प्रायः शिक्षक भूगोल विषय कों नक्शे एवं ग्लोब की सहायता से विभिन्न महाद्वीपों पर्वत, पठार, मैदानों की स्थिति को बच्चों के सामने रख देता है परंतु भूगोल पढ़ाने का प्रयोजन इससे कुछ भिन्न एवं व्यापक है यदि हम भूगोल की उपयोगिता उनके अपने जीवन से संबंध को दिखा सकें तो बच्चों में मौलिकता का विकास होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें कुछ अध्ययन एवं अध्यापन की योजना बनानी होगी इसके लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत है जिसे बच्चों की आयु को ध्यान में रखते हुए बच्चों के आसपास जो वह देखता है, समझता है, उसे भूगोल से जोड़कर भौगोलिक घटनाओं को अच्छी तरह से समझाया जा सकता है।

बदलाव का अध्ययन

जंगल, खेत, नदी, नाला, तालाब, बस्ती, नगर एवं मानव के कियाकलापों में बदलाव का क्रम चलता रहता है। बरसात के मौसम में चारों ओर का दृश्य कैसे बदल जाता है। वहीं गर्मी के दिनों में इनमें क्या–क्या बदलाव दिखता है, इन सबका अध्ययन हमारे आस–पास के परिवेश में निहित रहता है।

बदलाव के क्रम को समझना भूगोल अध्ययन का एक पक्ष है। सृष्टि के समस्त क्रम में हर क्षण बदलाव जारी है। इस बदलाव के क्रम में हमारी वर्तमान स्थिति निर्धारित हुई है।

उदाहरण –

1. मानव के जीवन क्रम में बदलाव ।
2. जैव जगत में बदलाव ।
3. भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक दृश्यों में बदलाव ।
4. स्थानीय एवं वैश्विक परिदृश्यों में बदलाव आदि ।

यदि हम उक्त तत्वों दृश्यों में बदलाव के क्रम को समझे तो खुद की वर्तमान स्थिति ऐसा क्यों है? प्रश्न का उत्तर हमें स्वतः मिलने लगता है। यह बदलाव का क्रम हमें परस्पर सामजस्य, समस्याओं का समाधान व विकास की ओर उन्मुख करती रहती है ।

बदलाव के सकारात्मक व नकारात्मक पहलु पर चर्चा आयोजित कर बदलाव के अध्ययन को कुछ उदाहरणों द्वारा समझ सकते है जैसे –

3

स्थानीयता की पहचान और उसकी ताकत

स्थानीय स्तर पर उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं के माध्यम से स्थानीय की पहचान कराई जानी चाहिए। यदि विद्यार्थी अपने आस–पास के माहौल में छोटी–छोटी नदियों, पर्वतों, तालाबों, झींलों आदि को देखता है और खेत खलिहानों को देखता है, विभिन्न उद्योगो, कारखानों को देखता है। इस आधार पर उसके ज्ञान को और विस्तृत किया जा सकता है ।

यदि हम नदी के बारे में या उसकी विभिन्न अवस्थाओं के बारे में बता रहे हैं तो बेहतर है कि हम उसे किसी स्थानीय नदी को दिखा कर या बताकर उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा उसके निर्मित विभिन्न स्थलाकृतियों के बारे में बता सकते है इसी के साथ ही नदी के विभिन्न स्थलरूपों के बारे में बताया जा सकता है।

नदी से हमें रेत की प्राप्ति होती है और उस रेत का उपयोग घर बनाने तथा सड़क आदि के निर्माण के लिए किया जा सकता है। इससे बालक को यह ज्ञान होगा कि स्थानीय सामग्री उसके लिए किस प्रकार से उपयोगी है। नदी से मिलने वाला जल सिंचाई के काम में प्रयुक्त किया जाता है। बालक जल का उपयोग विभिन्न कार्यो में करता है। इस प्रकार की जानकारी दी जा सकती है।

4

अर्न्तसम्बन्ध (परस्पर निर्भरता की समझ)

भूगोल विषय का अध्ययन पृथ्वी का अध्ययन है और पृथ्वी के समस्त उपादान एक दूसरे से संबंधित है यदि किसी एक में परिवर्तन होता है तो दूसरा स्वयं ही प्रभावित होता है और इसका प्रभाव मानव समाज पर तथा प्राणी जगत पर पड़ता है। मौसम एक अल्पकालिक घटना होती है दीर्घ काल में यह जलवायु का स्वरूप ग्रहण कर लेती है या मौसम का औसत होती है मौसम में होने वाले प्रत्येक परिवर्तन का मानव प्राणी और वनस्पति जगत पर प्रभाव पड़ता है।

यदि हम जलवायु को निर्धारित करने वाले तत्व तापमान, आद्रर्ता, वर्षा, पवन, वायुदाब को देखे तो ये सभी एक दूसरे से अर्न्तसंबंधित है। यदि किसी स्थान का तापमान अधिक होता है तो वहाँ पर वर्षा की मात्रा कम होती है और इस कारण वहाँ पर वनस्पति का आवरण कम पाया जाता है और जीवन की परिस्थितियाँ विषम होती है। इसी प्रकार जहां पर वर्षा पर्याप्त होती है वहाँ पर वनस्पति का आवरण अधिक पाया जाता है। यदि हम विद्यार्थी को जलवायु का अध्ययन करा रहे हैं तो हमें उसके स्थानीय मौसम की दशाओं को लेकर बताना चाहिए साथ ही उसके रिस्तेदार, मामा–मामी, नाना–नानी, मौसा–मौसी, दादा–दादी यदि उसके गाँव या शहर से कहीं दूर पर निवास कर रहे है तो वहाँ के मौसम व जलवायु की तुलना करने के लिए हम बालक को कह सकते हैं। यदि बालक रायपुर, भिलाई या बिलासपुर के आस–पास के क्षेत्र में रहता है तो उसका कोई रिस्तेदार छत्तीसगढ़ के उत्तर के किसी

5

मुहल्ला, गाँव, पंचायत व शहर

भारत की आत्मा भारत के मोहल्लें, गाँव एवं शहर में बसती है। ग्रामीण परिवेश में प्राकृतिक वातावरण जैसे वायु, जल आदि शुद्ध होते है। मनुष्य जन्मजात समूह में रहने का आदि है, तो वह उचित प्राकृतिक समतल मैदानी भूमि का चयन करते हुए, जहाँ उसके बसने हेतु आदर्श परिस्थियाँ जैसे कृषि योग्य भूमि, आवास हेतु जमीन, लकड़ी, जल आदि की सुविधा हो वहाँ बस जाता है ।

मोहल्लों में घरों की संख्या और उनमें रहने वाली संख्या कम होती है, लेकिन उनके आर्थिक विकास का आधार प्राथमिक व्यवसाय है।

मोहल्ला, गाँव, पंचायत की अर्थव्यवस्था वहाँ निवास करने वाले व्यक्ति समूहों का जीवन कृषि एवं वनों आधारित उपज पर आधारित होता है। यह छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में उत्तर एवं उत्तर पूर्व तथा दक्षिण क्षेत्रान्तर्ग उच्च पठारी, पहाड़ी क्षेत्र, वनाचल गांवों में स्थिति काफी दयनीय है। चूंकि अशिक्षा, अंधविश्वास वनोपज आधारित जीवन का परिलक्षण निवासित व्यक्तियों के आवास, वस्त्र, भोजन और घरों में स्थित बर्तनों पर भी परिलक्षित होता है। जैसे उत्तर पूर्व में चांवल की उपज पर आधारित "हड़िया" का सेवन, बस्तर संभार्गान्तगत नारायणपुर, बीजापुर, दंतेवाड़ा जिलों के गांवों में "लांघ" नाम से निर्बाहन स्थानीयता की पहचान और उसकी ताकत।

स्थानीयता से तात्पर्य उन सभी वस्तुओं व स्थानों से है जो विद्यार्थी के विद्यालय, घर के आस–पास के क्षेत्र में पाई जाती है या वह अपने दैनिक जीवन में उसमें प्रभावित होता रहता है। वे उसके लिए उपयोगी हैं और

6

संसाधन और उत्पादन

संसाधन मानव के विभिन्न उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा किसी कठिनाई का निवारण करने वाले या निवारण में योग देने वाले आश्रय या स्त्रोत संसाधन की संज्ञा देते है। इस अर्थ में स्वयं कोई वस्तु या स्त्रोत को संसाधन नहीं हैं उसकी संसाधनता मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति या कठिनाई निवारण करने की आंशिक या पूर्ण क्षमता में निहित है। अतः किसी भी पदार्थ या तत्व को हम संसाधन की संज्ञा तभी दे सकते है जब किसी भी देश काल के मनुष्य में उस वस्तु या तत्व से कार्य सम्पन्न करने या लाभ प्राप्त करने की बौद्धिक सांस्कृतिक और भौतिक क्षमता हो। अतः मनुष्य की क्षमता और पदार्थो की संसाधनता में घनिष्ठ संबंध है।

जन साधारण में "संसाधन" शब्द के अर्थ में विभिन्न धारणायें प्रचलित है। उदाहरण स्वरूप संसाधन को मात्र किसी गोचर वस्तु या पदार्थ एवनिज पदार्थ जल, भूमि, मिट्टी आदि की ही सम्बोधक माना जाता है। वस्तुतः गोचर वस्तुएं हो सकती है साथ ही अगोचर तत्व भी संसाधन है और संभवतः मनुष्य के जीवन में उनका महत्व गोचर तत्वों से कम नहीं है। स्वास्थ्य शिक्षा, ज्ञान सामाजिक सामंजस्य, राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समुन्नति राष्ट्रीय गठन या अंर्तराष्ट्रीय सहयोग जैसे अमूर्त तत्व मानव जगत के महत्वंपूर्ण संसाधन में से है। इसी प्रकार साधारणतया संसाधन शब्द से तथा कथित प्राकृतिक संसाधनों का ही अर्थ लिया जाता है और मानवीय या सांस्कृतिक तत्वों का समुचित मूल्यांकन नहीं किया जाता। किसी एक या अधिक वस्तु द्रव्य या तत्व को ही संसाधन मान लेते है। जैसे – कोयला, लोहा, सोना या

बच्चों के अनुभव

"महानदी के कलिंदर, ककड़ी और सब्जी की खेती किसानो को पड़ी भारी"

महानदी की रेत पर खेती करने वाले तटीय गांवों में से एक हमारा गाँव अछोला है। ककड़ी, तरबूज, खरबूज, कुम्हड़ा, लौकी, बरबट्टी, करेला जैसी जायद फसल से ही ग्रीष्मकाल के चौमासे में हमारे आमदनी का अतिरिक्त स्त्रोत है। नदी मोड़ (घोड़ारी), पारागांव, समोदा के किसान भी महानदी में सब्जी और तरबूज–खरबूज की खेती करते है। यहाँ के कलिंदर की माँग तो देश के महानगरों में खूब है।

इस वर्ष तो पहले पानी की कमी बाद में भीषण गर्मी से फसल चौपट हो गई। गर्मी के कारण फसलें झुलस गई, फूल और पत्ते झड़ गए जिससे पौधे मात्र ठूंठ बनकर रह गए। महानदी के ऊपरी क्षेत्र में डायवर्सन बनने के कारण पर्याप्त पानी ग्रीष्मकाल में नीचे तक नहीं पहुँच पाता।

इस वर्ष अंचल में तरबूज का उत्पादन नहीं के बराबर है, जिसके कारण भाव आसमान छू रहे हैं। धमतरी में मेरी सहेली रहती है उसने बताया कि रूद्री बैराज के नीचे ग्राम करेठा, कोलियारी, अछोटा, तेंदूकोन्हा, अमेठी, कलारतराई, परसुली, गुदगुदा, नारी और राजिम में सैकड़ों किसानों की फसल नदी में पानी की कमी और ऊपर से तेज गर्मी ने फसल पर व्यापक असर डाला है, फिर भी किसानों ने ले–देकर फसल को संवारा। अच्छी आमदनी इस वर्ष नहीं मिलने के कारण किसान चिंतित नजर आए।

– कुमारी अनामिका
शा.उ.मा.शाला–अछोला
वि.खं.–महासमुंद (छ.ग.)

प्रकृति से मानव का समझौता

उस समय की प्राकृतिक घटना जब मैं कक्षा 8वीं का विद्यार्थी था हर रोज की तरह अपने शाला के लिए रवाना होता था, रास्ते में वनस्पतियों से भरी पगडंडी रास्ते मिलते थे। जिसके दोनों किनारे पहाड़ों से घिरी पर्वत श्रृखलाएं फैली हुई थी। मैं रोज दो कदम चढ़कर उसकी ऊंचाई को छूने का प्रयास करता था किन्तु प्रकृति से सामना नहीं कर सकता अगर ऐसा होता तो उस पहाड़ पर या उसकी चोटी पर मैं चढ़ कर अपनी प्रबलता को स्थापित करना चाहता हूँ। तब मैंने समझा प्रकृति का मानव जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। क्योंकि जब भी प्रकृति अपनी कहर इस पृथ्वी पर डालती है तो मानव साधन तो जुटा लेता है किंतु प्रकृति को पूरी तरह से अपने अनुकूल बनाने में असमर्थ रहता है। उदाहरण जब बारिश होती है तो मानव अपनी सुविधानुसार छत्ता की व्यवस्था कर उस बारिश का सामना करता है किंतु क्या वह बारिश को रोक पाने में सफल होता है, नहीं क्योंकि मानव प्रकृति का दास है इससे मुझे समझ आया कि प्रकृति ही मानव का मार्ग प्रशस्त करती है, जिससे प्रकृति के साथ समझौता कर मानव अपना जीवन व्यतीत करता है और समयानुसार शाला जाते–जाते एक समय उस पर्वत की चोटी में चढ़ने में सफल हो गया किंतु उस पर्वत पर चढ़ने के लिए एक वर्ष लग गए। इससे ज्ञात हुआ कि भूगोल का विषय प्राकृतिक बोध कराती है तथा पृथ्वी में घटित होने वाली घटनाओं से परिचित कराती है। इस कारण और जानने की जिज्ञासा बढ़ती गई और मैंने अपने आसपास की वस्तुओं से भूगोल विषय पढ़ने का साधन बना लिया ।

– राम मोहन ताण्डे

भूगोल का हमारे जीवन से संबंध

भूगोल विषय का अध्ययन हमें पर्यावरण के संरक्षण के संबंध में जागरूक बनाता है। इस संबंध में मुझे अपने बचपन की बात याद आ रही है जब मुझे मेरे दादा जी कहते थे कि बेटा शाम के समय पेड़ पौधों की पत्तियों को तोड़ने से पाप लगता है और हम बचपन से ही पेड़ पौधों के संरक्षण के बारे में जागरूक बने हुए है और आज हम उन्हीं बातों को अपने बच्चों को समझाते हैं।

भूगोल का मानव जीवन से घनिष्ट संबंध है। मानव की मूलभूत आव यकताएं अर्थात् रोटी, कपड़ा और मकान का संबंध प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से भूगोल विषय के अध्ययन से ही जुड़ा हुआ है। क्योंकि रोटी अर्थात् विभिन्न फसलों का उत्पादन कृषि से संबंधित है भूगोल का अध्ययन हमें कृषि के लिए मिट्टी, जल, वायु एवं जलवायु की उपयोगिता से अवगत कराता है और हम उनके संरक्षण के बारे में जागरूक बनते हैं। कपड़ा का संबंध कपास एवं अन्य रेशेदार पौधा है जिनका उत्पादन हम कृषि से करते हैं।

मकान, मानव की महत्वपूर्ण आव२यकता है जिनका संबंध भी भूगोल से ही जुड़ा हुआ है। भूगोल में हम विभिन्न प्रकार के चट्टानों एवं वनस्पतियों का अध्ययन करते है और अपने आवास के निर्माण में उनका उपयोग करते है एवं उनके महत्व से परिचित होते हैं।

भूगोल विषय की एक महत्वपूर्ण विषय–वस्तु है नदियां। इसके जल का उपयोग मनुष्य अपनी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति में करता है। इस संबंध में मुझे अपने गांव के बुजुर्गों के द्वारा कही गई बात याद आती है। नदी में स्नान करने के पहले नदी जल का स्प२ा कर प्रणाम करना। मुझे

सदैव जल संरक्षण के लिए प्रेरित करता है और मैं यथासंभव उनके संरक्षण का प्रयास भी करता हूँ और दूसरों को भी जल संरक्षण के प्रति प्रेरित करता हूँ। आज अगर मनुष्य जाति को अपना अस्तित्व को बचाकर रखना है तो सभी को जल संरक्षण के लिए जागरूक बनाना होगा।

पुलकराम सप्रे .....

मैने मित्रता छोड़ दी

उस समय मैं कक्षा 6वीं में पढ़ता था । मेरा मित्र कक्षा 9वीं में पढ़ता था। सुबह के स्कूल अवका२ा के पश्चात् मैं और मेरे मित्र के मन में प्रकृति के सौंदर्य से अभिभूत होकर प्राकृतिक दृ यावली की सैर हेतु वन भ्रमण की इच्छा हुई। हम दोनों हरे–भरे वृक्षों, फूलों की खु ाबू पक्षियों की कलरव से आनंदित होते हुए घने जंगल में प्रविष्ट हो गए। तभी सहसा पीछे से कर्कस तेज ध्वनि के साथ काला सा छोटा पहाड़नुमा जानवर आता दिखाई दिया। मेरा मित्र मुझसे 04 वर्ष बड़ा था, जोखिम का अभास होते ही वह पेड़ पर चढ़ गया। मैं छोटा होने के कारण पेड़ पर न चढ़ सका। मेरे मन में तत्क्षण खयाल आया कि मुसीबत में धैर्य से काम लेना चाहिए मैने भालू को निकट पाकर दोनों आंखे बंद कर ली श्वसन बिल्कुल धीमा, मृतप्राय सा शरीर को परिवर्तित कर दिया। भालू मेरे शरीर को उलट पुलट कर देखा सूंघा और मृत जानकर चला गया। ये सारा माजरा वृक्ष के ऊपर बैठा मेरा मित्र देख रहा था। जब भालू वापस चला गया। तब मेरे मित्र ने वृक्ष से उतरकर मुझसे पूछा, मित्र सच कहना भालू आपके कान में मुंह रख कर क्या

.कह रहा था? मैंने बताया कि भालू ये कह रहा था कि ऐसे लोगों से मित्रता नहीं करनी चाहिए जो विपदा के समय में साथ छोड़ जाये ।

सत्यप्रकाश मरकाम

सूर्योदय के पूर्व की सैर का आनंद

मैं शहर में रहने वाली और मेरी मौसी की बेटी मेरी बहन होने के साथ ही मेरी सहेली भी थी। गाँव की रहने वाली थी, हम दोनों के विचारों में मेल था किंतु ग्रामीण और शहरी परिवे ा के कारण कुछ आदतों में अंतर था। एक रोज मैं अपनी सहेली के घर गर्मी की छुट्टियां बिताने गई थी। उस समय मैं कक्षा आठवीं की छात्रा थी। शहरी आदतों के कारण मैं सुबह आठ बजे से पहले नहीं उठती थी, किंतु मौसी के गांव में हम सब को सूर्योदय के पहले ही उठा दिया गया। बड़े बेमन से हम सब उठे और अनमने ढंग से तैयार होकर सैर को निकल पड़े। रात के समय गहरा अंधेरा होने के कारण हमें गांव के सौंदर्य का अनुभव नहीं हो पाया था किंतु जब सुबह गांव की सैर करने गए तब वहां की हरियाली, सड़के, पगडंडियाँ, पहाड़ियों, जानवरों की गूंज, पक्षियों की चहचहाहट, चिड़ियों की चहक, सूर्योदय की अनुपमा, किरणों की आभा और नदियों की कलकल करती हुई लहरों ने मन को मोह लिया पास ही नदियों से निकलती हुई नहर की सीढ़ियों पर बैठकर हमने रास्ते के खेत से तोड़े हुए चने की बूटियां खाने लगे। ये प्रकृति की सुहानी बाते हमारे हृदय में घर कर गई और मेरा मन करने लगा का ा इतनी प्यारी स्वर्ग सी दुनिया हमारे शहर में भी होनी चाहिए परंतु ये सब

शहरों में कल्पना मात्र है। तब हमने संकल्प किया हम भी अपने शहर को प्रकृति के उपहारों से ओतप्रोत करेंगे और सूर्योदय का आनंद रोज लिया करेंगे।

शगुफ्ता शीरिन रज़ा

पृथ्वी का गुरूत्वाकर्षण

जब मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ती थी तब मेरे ि क्षक ने बताया कि पृथ्वी गोल होती है, तथा हम उसके ऊपरी भाग में निवास करते हैं, तब मेरे मस्तिष्क में यह विचार आया कि यदि हम पृथ्वी के ऊपरी भाग में रहते हैं तथा पृथ्वी गोल है और यह घूमती रहती है तो हम पृथ्वी से गिरते क्यों नहीं है? उस समय तो यह समझ में नहीं आया।

किंतु जब मैं आगे की कक्षाओं को पढ़ती गयी व भूगोल विषय का गहन अध्ययन किया तब मुझे पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण के बारे में जानकारी मिली।

पृथ्वी में गुरूत्वाकर्षण पायी जाती है, जो कि उसके केन्द्र में सबसे अधिक होती है तथा वह प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर आकर्षित करती है। जब भी हम किसी वस्तु को ऊपर की ओर फेंकते हैं तो वह हमे ा नीचे की ओर गिरता है यह पृथ्वी में पायी जाने वाली गुरूत्वाकर्षण का सबसे बड़ा उदाहरण है। चूंकि गुरूत्वाकर्षण केन्द्र में सबसे अधिक होती है इसलिए पृथ्वी अपनी ओर प्रत्येक वस्तु को खींचकर रखती है।

इस प्रकार का गुरूत्वाकर्षण सिर्फ पृथ्वी में नहीं होती बल्कि प्रत्येक ग्रहों में होती है तथा इस प्रकार के गुरूत्वाकर्षण के कारण ही पूरा सौरमण्डल एक निश्चित परिपथ में चलता रहता है।

इस प्रकार से भूगोल पढ़ने के बाद मेरी सारी अस्मंजस दूर हो गयी, तथा मुझे पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण के बारे में जानकारी प्राप्त हो गयी ।

कु. माधुरी पटेल

मानचित्रों का महत्व समझ में आया

बात सन् 2005 की है। मैं अपने गांव से 120 कि.मी. दूर स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता था। 04 अप्रैल 2005 को मेरी वार्षिक परीक्षा खत्म हुई। 05 अप्रैल को अपना गांव आया। मैं अपने घर बहुत दिनों के बाद आया था और बमुश्किल एक ही दिन घर में रह पाया था कि मुझे 06 अप्रैल को एक अपरिचित व्यक्ति जो कि मेरे पड़ोसी के परिचित थे के साथ काम करने के लिए जाना पड़ा। चूंकि मैं गर्मियों में कुछ काम किया करता था जिससे कि कुछ पैसों का इंतजाम हो जाए इसलिए मैं उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। विभिन्न स्थानों में घूमने का शौक व कुछ पैसे जमा करने की चाह दोनों ही इच्छाएं पूरी करने के लिए अवसर मिला था। इसलिए मैं उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। मैं उनके साथ लगभग तीन महीनों तक भारत के विभिन्न स्थानों का सैर किया व लगभग 5000 रू. इकट्ठा किया। अपने भ्रमण के दौरान मैंने महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु व कर्नाटक आदि राज्यों का सैर किया। चेन्नई में समुद्री आयात–निर्यात के लिए निर्मित डॉ.

अम्बेडकर डॉक् में चारों ओर घूम–घूमकर आनंद लिया। बंगाल की खाड़ी की लहरों साथ मैंने कई घंटे बिताए इन सभी स्थलों के बारे में मैंने किताबों में पढ़ा था प्रत्यक्ष दर्शन से मुझे अभूतपूर्व आनंद की प्राप्ति हुई। विशेष तौर पर समुद्र के किनारे घूमने का आनंद मेरे लिए अविस्मरणीय है।

स्कूल खुलने के पहले मुझे वापस घर आना था । मुझे तमिलनाडु के चेन्नई शहर से अकेले घर आना था । जो व्यक्ति मेरे साथ था वह मुझे मेरे परिश्रम के रूपयों को देकर मुझे अपने घर चले जाने के लिए कहा । मैं पहली बार इतनी दूर में अकेला था । मुझे डर लग रहा था कि मैं अपने घर कैसे पहुंचुंगा । इसके पहले मैंने कोई भी यात्रा नहीं की थी, जो इतनी लंबी हो । एक सोलह वर्ष के ग्रामीण लड़के के लिए यह एक साधारण बात नहीं थी । मैंने कुछ सोचा व बाजार से एक मानचित्र खरीदा । मानचित्र को देखकर व समझकर मेरा चेहरा खिल गया। मुझे मालूम हो गया कि मैं कहां पर था और मुझे किस रास्ते से होकर अपने गांव पहुंचना था । अब मेरे मन का डर जाता रहा और मैं खुशी–खुशी अपने गाँव वापस आ गया ।

गौरतलब है कि मैं विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजमार्गों से होते हुए चेन्नई पहुंचा था इसलिए रास्ते का ध्यान नहीं था और वापस आने के लिए रेल मार्ग से आना था। इस तरह एक मानचित्र का वास्तविक महत्व मुझे समझ आया था।

– घनश्याम कामड़े